



SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

शरीरीभूतः शब्दः — स्ट्रॉङ्गसंख्यायुक्तः केजेवी-बाइबिल-अध्ययनम्

प्रतिज्ञातम्, ततः मांसीभूतम् — दुःखभोक्ता दासः, इम्मानुएल्, कुमारी, वचनम्
मौलिकं बैबिलधर्मसिद्धान्तम् — यीशुख्रीष्टस्य सुसमाचारः

प्रारम्भिकवचनम्

अयम् अध्ययनम् एकं प्रश्नं पृच्छति: यीशुः कः इति। अयं भागः प्रतिज्ञाः अनुसरति। सेवकः तिरस्कृतः निरस्तः च, क्रूशात् पूर्वं बहुकालात् लिखितः। कुमारी पुत्रं जनयन्ती इम्मानुएल् नामकं, ईश्वरः अस्मद्भिः सह। बीजं उद्याने स्त्रियै प्रतिज्ञातम्। ततः शब्दः मांसम् अभवत्, श्रुतः दृष्टः स्पृष्टः च। प्रतिज्ञाः प्रथमम् आगताः। ततः पुरुषः आगतः। अयं भागः उभयं बाइबिलस्य स्वकीयैः वचनैः पठति।

त्रयः प्रश्नाः यान् इदम् अध्ययनम् उत्तरतिः

१. यशायाह ५३ अध्याये दुःखितपुरुषस्य विषये भविष्यवक्ता कस्य विषये वदति?
२. प्रभुः स्वयं किं चिह्नं प्रतिज्ञातवान्, इम्मानुएल् इति नाम्नः अर्थः कः?
३. येशुः स्वयं कुत्र अन्वेषणीयः इति उक्तवान्?

उद्घाटन-आधारः

E4. Micah 5:2

"त्वत्तः सः निर्गमिष्यति यः इस्राएले अधिपतिः भविष्यति" --> "यस्य निर्गमनानि पुरातनकालात्, अनादिकालात् एव अभूवन्।"

(मम व्यक्तिगतविचाराः: मीखा ग्रन्थस्य ५:२ एकं वाक्यं अस्य सम्पूर्णाध्ययनस्य उभौ अन्तौ धारयति। अयं शासकः एकस्मात् लघुनगरात् निर्गच्छति। लघुनगरात् निर्गमनम् आरम्भः अस्ति, यत्र मनुष्यः पादाभ्यां गन्तुं शक्नोति। अस्य शासकस्य निर्गमनानि पुरातनकालात्, सनातनकालात् सन्ति। सनातनकालात् निर्गमनं कदापि आरम्भः न भवति। मीखा उभे सत्ये एकस्मिन् एव वाक्ये कथयति। मीखा किमपि सत्यं न मूढकरोति।)

D. दुःखभोक्ता सेवकः — यः अध्यायः क्रूशानां सत्तायाः पूर्वमेव क्रूशं वर्णयति

D1. Isaiah 52:13

तस्य मुखं सर्वमानवात् अधिकं विकृतम् आसीत् --> तथा सः बहुजातीः सिञ्चिष्यति।

D2. Isaiah 53:1

कः अस्मद्वार्तायां विश्वासं कृतवान्? --> तस्य कापि शोभा नासीत् यत् वयं तम् इच्छेम।

D3. Isaiah 53:3

दुःखी पुरुषः, व्यथाभिज्ञश्च --> सः तिरस्कृतः आसीत्, वयं च तं न गणयाम।

D4. Isaiah 53:4

सः अस्माकं अपराधानां कृते क्षतः अभवत् + अस्माकं अधर्माणां कृते चूर्णितः अभवत् --> तस्य क्षतैः वयं स्वस्थाः भवामः।

D5. Isaiah 53:6

वयं सर्वे मेषा इव पथभ्रष्टा अभवाम --> परमेश्वरः अस्माकं सर्वेषाम् अधर्मं तस्मिन् आरोपितवान्।

D6. Isaiah 53:7

स वध्यमेषवत् नीयते --> स स्वमुखं न विवृणोति।

D7. Isaiah 53:8

सः जीवितानां भूमेः उच्छिन्नः --> मम जनानाम् अपराधस्य कृते सः ताडितः।

D8. Isaiah 53:9

सः दुष्टैः सह स्वश्मशानं कृतवान् + मरणे धनिकैः सह --> सः हिंसां न कृतवान्।

D9. Isaiah 53:10

यदा त्वं तस्य आत्मानं पापार्थं बलिं करिष्यसि --> सः स्वबीजं द्रक्ष्यति, स्वदिनानि च दीर्घीकरिष्यति।

D10. Isaiah 53:11

सः स्वप्राणान् मृत्युपर्यन्तम् अत्यजत् + सः अपराधिभिः सह गणितः अभवत् --> सः बहूनां पापं वहन्, अपराधिनां कृते च याचनाम् अकरोत्।

(मम व्यक्तिगतविचाराः यशायाहः ५३:९ पठत ततः यशायाहः ५३:१० पुनः क्रमेण पठत। यशायाहः ५३:९ कथयति यत् सः सेवकः मृतः आसीत् धनिकस्य पुरुषस्य समाधौ च निहितः। यशायाहः ५३:१० कथयति यत् सेवकस्य आत्मा पापार्थं बलिः कृते सति सः सेवकः स्वस्य बीजं द्रक्ष्यति स्वस्य दिनानि च दीर्घीकरिष्यति। एतौ द्वौ कथनौ मृतः तिष्ठतः पुरुषस्य विषये उभौ सत्यौ भवितुं न शक्नुतः। पुनरुत्थानम् यशायाहस्य अस्मिन् अध्याये लिखितम् अस्ति। पुनरुत्थानं घटितुं पूर्वं सप्तशतवर्षाणि पूर्वमेव एतस्मिन् अध्याये लिखितम् अस्ति।)

भिन्नं दर्शनं, समं दृश्यम् — भविष्यद्वक्तुः पत्रं, रथस्थः पुरुषश्च तत् उच्चैः पठन्

Acts 8:32 स शास्त्रस्येतद्वाक्यं पठितवान् यथा, समानीयत घाताय स यथा मेषशारकः लोमच्छेदकसाम्राज्ये मेषश्च नीबरो यथा आवध्य राननं स्त्रीयं तथा स समतिष्ठत (33) अनयायेन रिचारेण स उच्छिन्नो भवन्तं तदा तत्कालीनमनुष्यान् को जनो रणयितुं क्षमः यतो जीरन्मृगां देशां स उच्छिन्नो भवन्तं ३३ (34) अनन्तरं स फिनिपम् अरदन् निरुदयामि, भविष्यद्वादी यामिमां कथां कथयामास स किं स्वस्मिन् वा कश्चिच्छिद् अनस्मिन्? (35) ततः फिनिपस्य प्रकवणम् आरभ्य यीशोः पात्रान् तस्यैव प्रालोच्य

कस्य विषये भविष्यद्वक्ता एतत् वदति? --> फिलिपः तस्मात् एव शास्त्रात् आरभ्य तस्मै यीशुं प्रचारितवान्।

(मम व्यक्तिगतविचाराः- इदम् एकं सत्यं प्रश्नम्, येन पुरुषेण उत्तरं कदापि न श्रुतं तेन उच्चैः पृष्ठम्। प्रश्नः अस्ति- भविष्यद्वक्ता कस्य विषये कथयति? उत्तरं फिलिप्पस्य निजमतं न अस्ति। फिलिप्पः यशायाहस्य ५३ अध्यायस्य तस्मिन् एव श्लोके आरब्धवान्। फिलिप्पः तस्मात् श्लोकात् यीशुं प्रचारितवान्। प्रेरितानां स्वयं यशायाहस्य ५३ अध्यायस्य पाठनं अस्मदर्थं लिखितम् अस्ति। कस्यापि प्रेरितानां यशायाहस्य ५३ अध्यायस्य पाठनविषये अनुमानं कर्तुं न आवश्यकम्।)

E. इममानुएल् — अस्माकं सह ईश्वरः, जातः बालः दत्तश्च पुत्रः

E1. Isaiah 7:14

प्रभुः स्वयं युष्मभ्यं चिह्नं दास्यति --> कुमारी गर्भं धारयिष्यति, पुत्रं जनयिष्यति, तस्य नाम इममानुएल् इति आह्वयिष्यति।

E2. Isaiah 9:6

बालकः जातः + पुत्रः दत्तः --> तस्य नाम पराक्रमी ईश्वरः, सनातनः पिता इति आख्यास्यते --> तस्य राज्यवृद्धेः अन्तः न भविष्यति।

(मम स्वकीयाः विचाराः- यशायाह ९:६ इत्यस्य श्लोकस्य क्रियापदद्वयस्य क्रमं पश्यत। तौ क्रियापदे समाने न स्तः। तौ क्रियापदे तस्मिन् क्रमे आकस्मिकतया न स्थिते। बालकः जायते। पुत्रः दीयते। जन्म इति तत् वर्णयति यत् कथं बालकः जगति आगतः। दान इति तत् वर्णयति यत् पूर्वमेव विद्यमानस्य पुत्रस्य किम् अभवत्। अधुना अस्मै बालकाय दत्तानि नामानि विचारयत। यशायाह ९:६ न कथयति यत् बालकः महाबलं ईश्वरम् इव भविष्यति। यशायाह ९:६ कथयति यत् "तस्य नाम 'महाबलः ईश्वरः' इति आह्वयिष्यते।" सूचीयां प्रथमं नाम, अद्भुतः, पेलै (H6382) इति अस्ति। पेलै इत्यस्य तदेव मूलम् अस्ति यत् मानोहेन न्यायाधीशानां पुस्तके १३ अध्याये प्राप्तम्, यदा सः नाम अयाचत परं न प्राप्तवान्। यशायाह ९:६ इत्यत्र नाम दत्तम् अस्ति।)

E3. Isaiah 9:2

ये लोकाः अन्धकारे चरन्ति स्म ते महाज्योतिः अपश्यन्।

F. स्त्रियाः बीजं कुमारी च — प्रथमं प्रतिज्ञानं तस्य च पूर्तिः

F1. Genesis 3:15

तव बीजस्य तस्याः बीजस्य च मध्ये --> सः तव शिरः चूर्णयिष्यति, त्वं च तस्य पादमूलं चूर्णयिष्यसि।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: ইশ্বর: উদ্যানে সপ্তে প্রাতে উত্থিত: ৩:১৫ ইতি বচনম্ অবদত্ত, যদা পাপং জগতে প্রবেষ্টবৎ। উত্থিত: ৩:১৫ সম্পূর্ণ ধর্মগ্রন্থে উদ্ধারকস্য প্রথমা প্রতিজ্ঞা অস্ति। লক্ষ্যতাম্ এতস্মিন্ শ্লোকে কস্য বীজস্য নাম উক্তম্। ধর্মগ্রন্থস্য শেষভাগে কুলপরম্পরা পুরুষৈ: এব অনুসূতা। উদাহরণানি সন্তি অব্রাহামস্য বীজং, দাউদস্য বীজং চ। অত্র, একবারং, আদিত: এব, যা পরম্পরা নামিতা সা স্ত্রিয়া: বীজম্ অস্ति। লক্ষ্যতাম্ অপি এতস্মিন্ শ্লোকে দ্বৈ ক্তে, যে সমানপরিমাণে ন স্ত:। স্ত্রিয়া: বীজস্য পার্শ্বি: ক্তং ভবতি। সর্পস্য শির: চূর্ণিতং ভবতি।)

F2. Galatians 4:4 অনন্তরং সময়ে সম্পূর্ণতাং গতরতি ব্যরস্থধীনানাং মোচনার্থম্ (5) অস্মাকং পুত্রং প্রাপ্ত্যর্থং ঈশ্বরঃ স্ত্রিয়া জাতং ব্যরস্থায়্যা অধিনীভূতঃ স্বপুত্রং প্রেষিতবান্

ইশ্বর: স্বপুত্রং প্রেষয়ামাস, স্ত্রিয়া: জাতম্ --> যত্ ব্যবস্থায়া: অধীনান্ উদ্ধরেত্।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: গলাতীয়পত্রে ৪:৪ উক্তং যত্ ইশ্বর: স্বপুত্রং প্রেষিতবান্। গলাতীয়পত্রে ৪:৪ পুন: উক্তং যত্ পুত্র: স্ত্রীত: জাত: অববত্। বাক্যে প্রেষণং প্রথমং কথিতম্। জন্ম দ্বিতীয়ং কথিতম্। এষ: ক্রম: মহত্বপূর্ণ: অস্ति। কশ্চন জন: কুতস্থিত্ স্থানাত্ ন প্রেষ্যতে যদি স: জন: তত্র স্থানে পূর্বমেব ন আসীত্।)

ভিন্নং দর্শনম্, তদেব দৃশ্যম্ — প্রতিজ্ঞাতং চিহ্নং, দত্তং চ চিহ্নম্

Isaiah 7:14

কন্যা গর্ভ ধারয়িষ্যতি, পুত্রং জনয়িষ্যতি, তস্য নাম ইম্মানুএল্ ইতি আখ্যাস্যতি।

Matthew 1:18 যীশুখ্রীষ্টস্য জন্ম কথং তে মরিষম্ নামিকা কন্যা যুষফে রাগদভাসীৎ, তদা তযোঃ সঙ্গমাৎ প্রাক্ সা কন্যা পরিভ্রমণাত্মনা গর্ভরতী বভূব (19) তত্র তস্যাঃ পতি যুষফ্ সৌজন্যৎ তস্যাঃ কলঙ্গং প্রকাশয়িতুম্ অনিচ্ছন্ গোপনেনে তাং পারিত্যক্তুং মনশ্চক্রে (20) স তথৈব ভাবয়তি, তদানীং পৰমেশ্বরস্য দূতঃ স্বপ্নে তং দর্শনং দত্ত্বা রাজহাৰ, হে দায়ুদঃ সন্তান যুষফ্ ৩৩ং নিজাং জাযাং মরিষম্ আদাতুং মা ভৈষীঃ (21) যতন্তস্যা গর্ভঃ পরিভ্রমণাত্মনোহভবৎ, সা চ পুত্রং প্রসরিষ্যতে, তদা ৩৩ং তস্য নাম যীশুম্ (অর্থাৎ জাতাবৎ) কৰিষ্যসে, যস্মাৎ স নিজমনুজান্ তেষাং কলুষেভ্য উদ্ধরিষ্যতি (22) ইত্থং সতি, পশ্য গর্ভরতী কন্যা তনয়ং প্রসরিষ্যতে ইম্মানুয়েল্ তদীয়ঞ্চ নামধেয়ং ভরিষ্যতি ইম্মানুয়েল্ অস্মাকং সঙ্গীশ্বরইত্যর্থঃ (23) ইতি যদ্ রচনং পূর্বং ভরিষ্যদ্বজ্রা ঈশ্বরঃ কথায়ামাস, তৎ তদানীং সিদ্ধমভবৎ

তং তস্য নাম যীশু: ইতি আহ্বয়িষ্যসি, যত: স: স্বজনান্ তेषাং পাপেভ্য: ত্রাস্যতি --> তে তস্য নাম ইম্মানুএল্ ইতি আহ্বয়িষ্যন্তি, यस्य अर्थ: अस्ति अस्माभि: सह ईश्वर:।

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: দ্বয়ো: বৃত্তান্তयो: ভেদ: এব শিক্ষা অস্ति। যশায়াহ 7:14 বদতি যত্ সা (SHE) বালকস্য নাম ইম্মানুএল্ ইতি আহ্বাস্যতি। মতি: 1:23 বদতি যত্ তে (THEY) বালকস্য নাম ইম্মানুএল্ ইতি আহ্বাস্যন্তি। যশায়াহস্য বৃত্তান্তে একা মাতা স্বশিশো: নাম দদাতি। মতে: বৃত্তান্তে সর্বে জনা: যীশো: নাম দদতি। মতি: অপি তাৎশ্চ কিমপি কৰোতি যত্ পাঠকেন অনুমাতুং ন আবশ্যকম্। মতি: বিরম্য পাঠকার্থ নাম্ন: অর্থ স্বয়মেব মতিসুসমাচারগ্রন্থস্য অন্ত: এব অনুবদতি। কস্মিন্ পি শতকে কোঃপি পাঠক: ইম্মানুএল্ ইতি নাম্ন: অর্থ ন বিস্মর্তু শক্নোতি। ইম্মানুএলস্য অর্থ: অস্ति ইশ্বর: অস্মাभि: সহ। মতি: অপি ন বদতি যত্ যীশো: জন্ম কেবলং মতিং যশায়াহস্য ভবিষ্যদ্বাণ্যা: স্মারয়তি। মতি: বদতি যত্ এতৎ সর্ব কৃতম্ (DONE) আসীত্ যথা যশায়াহস্য ভবিষ্যদ্বাণী পূর্ণা (FULFILLED) ভবেত্।)

F3. Luke 1:31 পশ্য ৩৩ং গর্ভং ধুংরা পুত্রং প্রসোষ্যসে তস্য নাম যীশুরিতি কৰিষ্যসি (32) স মহান্ ভরিষ্যতি তথা সর্বের্ভ্যঃ শ্রেষ্ঠস্য পুত্র ইতি খ্যাস্যতি; অপৰং প্রভুঃ পৰমেশ্বরস্তস্য পিতৃদায়ুদঃ সিংহাসনং তস্মৈ দাস্যতি; (33) তথা সা যাকুবো ৩৩শোপৰি সর্বদা রাজ৩৩ং কৰিষ্যতি, তস্য রাজ৩৩স্যন্তো ন ভরিষ্যতি (34) তদা মরিষম্ তং দূতং বভাষে নাহং পুরুষসঙ্গং কৰোমি তহি কথমেতৎ সম্ভরিষ্যতি? (35) ততো দূতোহকথয়ৎ পরিভ্র আত্মা ৩৩রামাশ্রয়িষ্যতি তথা সর্বশ্রেষ্ঠস্য শক্তিস্তরোপৰি ছায়াং কৰিষ্যতি ততো হেতোস্তর গর্তাদ্ যঃ পরিভ্রবালকো জনিষ্যতে স ঈশ্বরপুত্র ইতি খ্যতিং প্রাপ্যতি

"কথং এতৎ ভবিষ্যতি, যতোহং পুরুষং ন জানামি?" --> "তত্ পবিত্রং যত্ ত্বত: জনিষ্যতে ইশ্বরস্য পুত্র: ইতি উচ্যতে।"

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: লুক: ১:৩৪ ইত্যত্র মরিষম: প্রশ্ন: যুক্তিযুক্ত: প্রশ্ন: অস্ति। জনা: অद्याপি তমেব প্রশ্নং পৃচ্ছন্তি যং মরিষম্ অপৃচ্ছত্। মরিষমৈ দত্তম্ উত্তরং তর্ক: ন ভবতি। মরিষমৈ দত্তম্ উত্তরং তস্য ঘোষণা ভবতি যত্ ইশ্বর: কিং কৰ্তুম্ উদ্যত: অস্ति। লুক: ১:৩২ ইত্যত্র নামিতং সিংহাসনং ধ্যানং দেহি: "তস্য পিতৃ: দায়ুদস্য সিংহাসনম্।" ইদম্ এব তত্ সিংহাসনম্ অস্ति যস্মিন্ যশায়া: ৯:৬ ইত্যনুসারং বালক: উপবেশ্যতি ইতি উক্তম্। ইদম্ এব তত্ রাজকুলং यस्य বিষয়ে স্তোত্রম্ ১১০ লিখিতম্ আসীত্।)

G. বচনং মাংসীভূতম্ — তথা কথং জন: বস্তুতস্তং প্রাপ্নোতি

G1. John 1:1 আদৌ বাদ আসীৎ স চ বাদ ঈশ্বরেণ সার্থমাসীৎ স বাদঃ স্বয়মীশ্বর এর [G3056 logos] (2) স আদারীশ্বরেণ সহাসীৎ (3) তেন সর্বং রস্তু সসৃজে সর্বেষু সৃষ্টবস্তুষু কিমপি রস্তু তেনাসৃষ্টং নাস্তি (4) স জীবনসাকারঃ, তচ্চ জীবনং মনুষ্যাণাং জ্যোতিঃ

আদৌ বাক্ আসীত্ + বাক্ ইশ্বরেণ সহ আসীত্ + বাক্ ইশ্বর: আসীত্ --> তেন সর্বাণি বস্তুনি নির্মিতানি।

(মম ব্যক্তিগতা: বিচারা: যোহনস্য ১:১ ইতি পড়কৌ ত্রীণি কথনানি একস্মিন্ বাক্যে দত্তানি সন্তি। এতেষাং ত্রয়াণাং কথনানাং প্রত্যেকং আবশ্যকম্ অস্ति। প্রথমং কথনম্ অস্ति "আদৌ শব্দ: আসীত্।" শব্দ:, য: মানবশরীরং ধারয়িতুং পূর্ব ইশ্বরপুত্রস্য উপাধি: আসীত্, তস্য আরম্ভ: নাসীত্। দ্বিতীয়ং কথনম্ অস্ति "শব্দ: ইশ্বরেণ সহ আসীত্।" শব্দ: কেবলং পিতৃ: ইশ্বরস্য অপরং নাম ন ভবতি, যত: কশ্চন স্বেন সহ ভবিতুং ন শক্নোতি। তৃতীয়ং কথনম্ অস্ति "শব্দ: ইশ্বর: আসীত্।" শব্দ: ইশ্বরস্য সমীপে স্থিত: অলপতর: জীব: ন ভবতি। এতেষু ত্রিষু কথনেষু কস্যচিৎ অপসারণেন যোহনে লিখিতাত্ বাক্যাত্ ভিন্নং বাক্যম্ উৎপদ্যতে।)

G2. John 1:14 স বাদো মনুষ্যরূপেণারতীর্ঘ্য সত্যতানুগ্রহভ্যাং পরিপূর্ণঃ সন্ সার্থম্ অস্মাভি ন্যরসৎ ততঃ পিতুবদ্বিতীয়পুত্রস্য যোগ্যো যো মহিমা তং মহিমানং তস্যাপশ্যাম [G4637 skenoo]।

"বাক্ মাংসীভূত: অববত্ + অস্মাকং মধ্যে ন্যবসত্" --> "বয়ং তস্য মহিমাং অপশ্যাম, পিতৃ: একজাতস্য মহিমাং ইব।"

ভিত্তি দৃশ্য, সম দৃশ্যস্থানম্ — মরুভূমৌ তম্ভুঃ, শরীরস্য চ তম্ভুঃ

Exodus 25:8

তে মাং পবিত্রস্থানং কুৰ্বন্তু --> যথাহং তেমাং মধ্যে নিবসামি।

John 1:14 স বাদো মনুষ্যরূপেণারতীৰ্য্য সত্যতানুগ্রহাভ্যাং পৰিপূৰ্ণঃ সন্ সাধৰ্ম্ অস্মাভি ন্যরসৎ ততঃ পিতৃবদ্বিতীয়পুত্ৰস্য যোগো যো মহিমা তং মহিমানং তস্যাপশ্যাম

শব্দঃ মাংসীভূতঃ অবত্, অস্মাকং মধ্যে ন্যবসত্ চ।

(মম ব্যক্তিগতবিচারাঃ যোহনলিখিতে ১:১৪ ইত্যত্র "অবসত্" ইত্যর্থং য়ূনানীশব্দং যোহনঃ প্রযুক্তে, সঃ স্কেন (G4637) ইতি অস্তি। স্কেন ইত্যস্য অর্থঃ বস্তুতঃ তম্ভুং স্থাপয়িত্বা তস্মিন্ তম্ভৌ নিবসনম্ ইতি। প্রাচীনকালে, ইশ্বরঃ ইসাএলজনান্ আদিশত্ যত্ তে তম্ভুং নিৰ্মান্তু যতঃ ইশ্বরঃ ইসাএলজনানাং মধ্যে নিবসেত্। ইসাএলজনাঃ তং তম্ভুং চৰ্মিৰ্ভিঃ কাঠেন সুবর্ণেন চ নিৰ্মমুঃ (নিৰ্মমিনম্ ২৫:৮)। যোহনলিখিতে ১:১৪ ইত্যত্র, তদেব চিত্রং পুনরাগচ্ছতি, পরন্তু তম্ভুঃ মানবশরীরম্ অস্তি। মরুভূমৌ স্থিতঃ তম্ভুঃ যোহনেণ বর্ণিতস্য সত্যস্য পূৰ্বচিত্রম্ আসীত্। মরুভূমৌ স্থিতঃ তম্ভুঃ যেশুখ্রীষ্টস্য শরীরং প্রতি অঙ্গুলিনির্দেশং करोতি স্ম। নূতনবিধানং মরুভূমিস্থং তম্ভুং ছায়াৰূপেণ, চিত্রৰূপেণ চ, যত্ যেশুখ্রীষ্টং প্রতি নির্দিশতি, কেবলং তদা এব পরিচায়য়তি যদা নূতনবিধানং তত্ প্রকটয়তি যত্ প্রতি সা ছায়া নির্দিশতি স্ম। যোহনঃ এতত্ সত্যং যেশুখ্রীষ্টস্য শরীরবিষয়ে যোহনলিখিতে ১:১৪ ইত্যত্র স্পষ্টতয়া কথয়তি।)

G3. Colossians 1:15 স চাদৃশ্যসেত্বৰস্য প্রতিমূৰ্তিঃ কৃৎস্নাযাঃ সৃষ্টেবাদিকৰ্ত্তা চ (16) যতঃ সৰ্বব্ৰহ্মেণ তেন সসৃজে

সিংহাসনৰাজৎরপৰাক্ৰমাধীনী স্বৰ্গমৰ্ত্ত্যস্থিতানি দৃশ্যাদৃশ্যানি রত্নানি সৰ্ববাণি তেনৈব তস্মৈ চ সসৃজিৰে (17) স সৰ্বব্ৰহ্মা আদিঃ সৰ্বব্ৰহ্মাং স্থিতিকারকশ্চ

তেন সৰ্বাণি বস্তুনি সৃষ্টানি + সঃ সৰ্বব্ৰহ্মঃ পূৰ্ব বৰ্ততে --> তেন সৰ্বাণি স্থিতানি সন্তি।

G4. Colossians 2:9 যত ঈশ্বৰস্য কৃৎস্না পূৰ্ণতা মূৰ্তিমতী খ্রীষ্টে রসতি (10) যুযুৎস তেন পূৰ্ণা ভরথ যতঃ স সৰ্বব্ৰহ্মাং রাজৎরকৰ্ত্তৎরপদানাং মূৰ্ত্ত্যস্তি,

তস্মিন্ ইশ্বৰত্বস্য সম্পূৰ্ণতা শারীরিকৰূপেণ বসতি --> যুযং তস্মিন্ সম্পূৰ্ণাঃ স্থা।

G5. কথং ত্বং তং বিন্দসি — সঃ অস্মান্ অবদত্ কুত্র পশ্যেম

John 5:39 ধৰ্মপুস্তকানি যুযম্ আলোচয়ধ্বং তৈ রাকৈবনভাযুঃ প্রাপ্যাম ইতি যুযং বুধ্যত্বৈ তদ্ধৰ্মপুস্তকানি মদৰ্থে প্রমাণং দদতি (40) তথাপি যুযং পৰমাযুঃপ্রাপ্তয়ে মম সংনিধিম্ ন জিগমিষথ

শাস্ত্রাণি অন্বিষ্যধ্বম্ --> তানি এব মম সাধৰ্ম্যং দদতি।

(মম ব্যক্তিগতাঃ বিচারাঃ যীশুঃ যোহন ৫:৩৯-৪০ ইত্যত্র এতত্ উক্তবান্ তেভ্যঃ পুরুষেভ্যঃ যে তস্মিন্ কালে জীবতাং প্রায়ঃ সৰ্বেভ্যঃ অধিকতয়া শাস্ত্রাণি জানন্তি স্ম। এতে পুরুষাঃ শাস্ত্রাণি কণ্ঠস্থানি কৰ্তুং শক্নুবন্তি স্ম। যীশুঃ এতান্ পুরুষান্ উক্তবান্ যত্ এভিঃ কণ্ঠস্থীকৃতং সম্পূৰ্ণ শাস্ত্রং তং প্রতি সংকেতং करोতি স্ম। যীশুঃ এতান্ পুরুষান্ উক্তবান্ যত্ এতে পুরুষাঃ তথাপি জীবনং প্রাপ্তুং তস্য সমীপম্ ন আগমিষ্যন্তি। শাস্ত্রস্য শব্দানাং জ্ঞানং তেভ্যঃ শব্দেভ্যঃ যস্য বিষয়ে উক্তং তস্য পুরুষস্য জ্ঞানেন সমানং ন ভবতি। জীবনস্য অন্বেষণার্থম্ অন্যত্ স্থানং নাষ্টি। যীশুঃ ন উক্তবান্ যত্ যুয্মাকং ভাবান্ অন্বিষ্যত। যীশুঃ উক্তবান্ যত্ শাস্ত্রাণি অন্বিষ্যত।)

G6. Luke 24:25 তদা স তারুৱাচ, হে অবোধৌ হে ভৱিষ্যদ্বাদিভিৰুক্তৱাক্যং প্রত্যেতুং বিনম্রমানৌ; (26) এতৎসৰ্বদুঃখং ভুক্ত্বা স্বভূতিপ্রাপ্তিঃ কিং খ্রীষ্টস্য ন ন্যায্যা? (27) ততঃ স মুসাংপ্রমাৰভ্য সৰ্বব্ৰহ্মদ্বাদিনাং সৰ্বব্ৰহ্মাশ্চে স্বস্মিন্ লিখিতাখ্যানাভিপ্রাযং বোধয়ামাস

মোশেতঃ আরম্ভ্য সৰ্বেষু চ ভবিষ্যবক্তৃষু --> সঃ সৰ্বশাস্ত্রেণ আত্মবিষয়কানি বস্তুনি ব্যাখ্যাতবান্।

G7. Luke 24:32 ততস্তৌ মিথোভিধাতুম্ আৰন্ধরস্তৌ গমনকালে যদা কথামকথয়ৎ শাস্ত্রার্থংবোধয়ৎ তদারযৌ বুদ্ধিঃ কিং ন প্রাজ্ঞলৎ?

কি নো হৃদয়ম্ অন্তঃ ন অদহ্যত, যদা সঃ অস্মান্ শাস্ত্রাণি ব্যাখ্যাতবান্?

G8. Luke 24:44 কথয়ামাস চ মুসারৱস্বাযাং ভৱিষ্যদ্বাদিনাং গ্রন্থেষু গীতপুস্তকে চ মযি যানি সৰ্ববাণি রচনানি লিখিতানি তদনুৰূপাণি ঘটয়ন্তে যুয্মাভিঃ সার্কং স্থিৎৱাহং যদেতদ্বাক্যম্ অরদং তদিনীং প্রত্যক্ষমভূৎ (45) অথ তেভ্যঃ শাস্ত্রবোধধিকারং দৎৱারদৎ,

সৰ্বাণি তানি পূৰ্ণানি ভবিতুমৰ্হন্তি, যানি মোশেব্ৰহ্মাযাং ভবিষ্যদ্বক্তৃগ্ৰন্থেষু স্তোত্রেণ চ মযি বিষয়ে লিখিতানি সন্তি --> তদা সঃ তেমাং বুদ্ধিম্ উদঘাটিতবান্।

(মম ব্যক্তিগতাঃ বিচারাঃ লুককৃতসুসংবাদস্য ২৪:৪৪-৪৫ ইতি পদ্বয়ং অস্য সম্পূৰ্ণাধ্যয়নস্য প্রশ্নস্য উত্তরং দদতি। ইদম্ উত্তরং যীশোঃ মুখাত্ আগচ্ছতি, যীশোঃ শ্মশানাত্ পুনরুত্থানানন্তরম্। যীশুঃ জীৰ্ণনিয়মস্য ত্রীণি বিভাগানি নামতঃ উক্তবান্: মোশেধৰ্মশাস্ত্রম্, ভবিষ্যদ্বক্তৃগ্ৰন্থাঃ, চ গীতানি। এতানি ত্রীণি বিভাগানি মিলিত্বা সম্পূৰ্ণ জীৰ্ণনিয়মং ভবন্তি। যীশুঃ অবদত্ যত্ সম্পূৰ্ণ জীৰ্ণনিয়মে তস্য বিষয়ে বস্তুনি সন্তি। যীশুঃ ন অবদত্ যত্ জীৰ্ণনিয়মস্য কেবলং কতিপয়েষু ভাগেষু এব তস্য বিষয়ে বস্তুনি সন্তি। ততঃ যীশুঃ শিষ্যেভ্যঃ দ্বৈ পৃথক্ কার্যে কৃতবান্। যীশুঃ শিষ্যেভ্যঃ শাস্ত্রাণি উদঘাটিতবান্। যীশুঃ শিষ্যাণাং বুদ্ধিঃ উদঘাটিতবান্। জনেণ এতযোঃ উভযোঃ আবশ্যকতা বৰ্ততে। জনঃ সম্পূৰ্ণ বাইবিলং স্বহস্তযোঃ ধারয়িতুং শক্নোতি, তথাপি তস্মৈ যীশুনা স্বনেত্রে উদঘাট্য বাইবিলে যীশুং দ্রষ্টুং সহায়তা আবশ্যকা ভবতি। বাইবিলং পঠতু। যীশুং প্রার্থয়তু যত্ সঃ ভবতে বাইবিলং উদঘাটয়তু। বাইবিলং পঠতু তিষ্ঠতু।)

সমাপনম্

G9. 1 John 1:1 আদিতো য আসীদ যস্য রাগ্ অস্মাভিৰশ্রাৱি যধঃ রযং স্বনেত্রে দৃষ্টবন্তো যধঃ বীক্ষিতবন্তঃ স্বকৰৈঃ স্পৃষ্টবন্তশ্চ তং জীৱনবাদং রযং জ্ঞাপয়ামঃ (2) স জীৱনস্বৰূপং প্রকাশত রযধঃ তং দৃষ্টবন্তস্তমিহ সাক্ষ্যং দদ্মশ্চ, যশ্চ পিতুঃ সন্নিধারৱৰ্ত্তাস্মাকং সমীপে প্রকাশত চ তম্

অনন্তজীবনস্বরূপং রহং যুগ্মান্ ভ্রাপ্যামঃ (3) অস্মাভি র্যদ্ দৃষ্টং শ্রুতঞ্চ তদেব যুগ্মান্ ভ্রাপ্যতে তেনাস্মাভিঃ সহাংশিৎ১৭ যুগ্মাকং ভবিষ্যতি অস্মাকঞ্চ সহাংশিৎ১৭ পিত্রা তৎপুত্রং যৌগ্মীকৃত্বৈন চ সার্কং ভবতি

শ্রুতম্ + অস্মাভিঃ নেত্রাভ্যাং দৃষ্টম্ + অবলোকিতম্ + অস্মাকং হস্তৈঃ স্পৃষ্টম্ --> তত্ অনন্তং জীবনং, যত্ পিত্রা সহ আসীত্, অস্মভ্যং চ প্রকটিতম্ अभवत्।

মম স্বকীয়া: বিচারা: যোহন: প্রথমযোহনপত্রস্য প্রথমাধ্যায়স্য প্রথমশ্লোকে সৌদেহ্যং ইন্দ্রিয়াণি গণয়তি: শ্রুতম্, দৃষ্টম্, সম্যক্ নিরীক্ষিতম্, অস্মাভিঃ হস্তৈঃ স্পৃষ্টং চ। যোহন: ন কস্যাশ্চিত্ ভাবনায়া: ন বা বিচারস্য বর্ণনং কৰোতি। যোহন: তস্য পুরুষস্য বর্ণনং কৰোতি যেন সহ স: ভোজনম্ অকরোত্। তস্মিন্বেব বাক্যে, যোহন: তং পুরুষং "তত্ শাশ্বতং জীবনম্, যত্ পিত্রা সহ আসীত্" ইতি আহ্বয়তি। যং পুরুষং প্রেরিতা: স্বহস্তৈঃ অস্পৃশন্, স এব পুরুষ: আদে: পূৰ্ব পিত্রা সহ আসীত্। ইদমেব প্রথমযোহনপত্রস্য প্রথমাধ্যায়স্য প্রথমাৎ তৃতীয়ং পর্যন্তং শ্লোকানাং সম্পূর্ণ কথনম্। যোহন: কথয়তি যত্ স: অস্য কথনস্য সাক্ষী অস্তি, ন তু অস্য কথনস্য সিদ্ধান্তবাদী।

অভ্যাসপ্রশ্নাবলী

১. যশায়াহ ৬:১৪ — পশ্য, কুমারী গর্ভ ধারয়িষ্যতি, পুত্রং চ জনিষ্যতি:

- a) তস্য নাম যীশু: ইতি ত্বং বদিষ্যসি
- b) তস্য নাম ইম্মানুএল্ ইতি আহ্বয়িষ্যন্তি
- c) তস্য নাম ইম্মানুএল্ ইতি আহ্বয়িষ্যন্তি

২. যশায়া: ৫৩:৩ — স: মনুষ্যৈ: তিরস্কৃত: ত্যক্ত: চ অস্ति:

- a) তথাপি স স্বমুখং ন ব্যাদত
- b) তস্য ক্ষতৈ: চ বয়ং স্বস্থীভূতা:
- c) দু:খী পুরুষ:, শোকেণ পরিচিত:

৩. যশায়াহ ৫৩:৬ — বয়ং সর্বৈ মেষবত্ পথভ্রষ্টা: অভবাম; প্রত্যেক: স্বমার্গ প্রতি পরাবৃত্ত: अभवत्:

- ক) পরমেশ্বর: চ তস্মিন্ অস্মত্সর্বৈষাং অধর্ম আরোপিতবান্
- b) স চ বহুনাং পাপং বহতি
- গ) তথাপি বয়ং তং ইশ্বরেণ তাদিতং, আহতং অমন্যামহি

৪. মীখা ৫:২ — তথাপি ত্বত্ত: মম কৃতে স: নির্গমিষ্যতি য: ইস্রাএলে শাসক: भविष्यति:

- a) তথা তস্য রাজ্যস্য অন্ত: ন भविष्यति
- খ) দাবীদস্য সিংহাসনে, তস্য রাজ্যে চ
- c) যস্য নির্গমনানি পুরাতনকালাত্, সনাতনকালাত্ अभवन्

৫. গলাতীপত্রম্ ৪:৪ — কিন্তু যদা কালস্য পূর্ণতা আগতা:

- a) ইশ্বর: স্বপুত্রং স্ত্রীজাতং প্রেপিতবান্
- b) পবিত্র: আত্মা ত্বয়ি আগমিষ্যতি
- c) স: স্বজনান্ তেষাং পাপেভ্য: ত্রাসয়তি

৬. যোহন: ১:১৪ — তথা শব্দ: মাংসম্ अभवत्:

- a) শব্দ: চ দেবেন সহ আসীত্
- b) অস্মাসু চ ন্যবসত্
- c) তং বিনা চ কিমপি ন নির্মিতম্

৭. যোহন: ৫:৩৯ — শাস্ত্রাণি অন্বেষয়; যত: তেষু যুয়ং অনন্তং জীবনং मन्यध्वे:

- a) জীবনং চ মনুষ্যাণাং জ্যোতি: আসীত্
- b) তে চ মাং সাক্ষীভবন্তি
- c) যদা স: অস্মভ্যং শাস্ত্রাণি ব্যাখ্যাতবান্

উত্তরসূচী: 1-b, 2-c, 3-a, 4-c, 5-a, 6-b, 7-b

এতৎ অধ্যয়নং কথং শাখতে

RABBIT TRAIL: উত্পত্তিগ্রন্থে ৩:১৫, স্ত্রিয়া: বীজং, প্রতিজ্ঞাতস্য বীজস্য সম্পূর্ণসূত্রং উদঘাটয়তি। ইদং সূত্রম্ অব্রাহমেণ মধ্যেন (উত্পত্তিগ্রন্থে ২২:১৮) দাউদেন মধ্যেন (স্তোত্রগ্রন্থে ১৩২:১১) চ প্রবহতি, গলাতীলিখিতে ৩:১৬ চ স্পষ্টতয়া নামত: উক্তম্ অস্ति।

গ্রীকভাষায়া: প্রমুখশব্দা:

“वचनम्” — **G3056 logos** — शब्दः; वचनम्; उक्तं वस्तु; विचारस्य अभिव्याक्तिः

योहनः योहनसुसंवादं जन्मना न आरभते। योहनः योहनसुसंवादं आदेः पूर्वमेव आरभते।

“अवसत्” — **G4637 skenoo** — तम्बुं स्थापयितुम्; शिबिरं कर्तुम्; तम्बौ निवसितुम्

"वाक् मांसीभूतः अभवत्, अस्माकं मध्ये न्यवसत्।" इदं वाक्यं वर्णयति यत् ईश्वरः मानवशरीरे तथा निवसति यथा पुरुषः तम्बुमध्ये निवसति।

हिब्रूभाषायाः मुख्यशब्दाः

“अद्भुतः” — **H6382 pele** — आश्चर्यम्; अद्भुतम्; बोधातीतं किमपि

पेले इति नाम यशायाह ९:६ इत्यत्र बालकाय प्रदत्तं प्रथमं नाम अस्ति।

“कुमारी” — **H5959 almah** — तरुणी अविवाहिता स्त्री; कुमारी; कन्या

अल्मा इति यशायाह ग्रन्थस्य 7:14 इति श्लोके प्रयुक्तः शब्दः अस्ति।

“इम्मनूएल्” — **H6005 Immanuel** — अस्माभिः सह ईश्वरः

इम्मनूएल् इति नाम स्वयमेव सम्पूर्णं वाक्यम् अस्ति। मत्तयः पाठकार्यम् एतत् नाम अनुवदति।

SOURCES & CREDITS

Scripture: Sanskrit New Testament in Assamese Script (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.

Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEP Bible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEP Bible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).